

St. 3,478. — 2) *wegreiben, abstreifen* ÇAT. Br. 3,8,4,8.

— परा *zerstampfen, zertreten*: परामृद्वात्कुमारं द्विजपुंगवः MBh. 7,643.

— परि 1) dass.: मूर्धाभिषिक्तस्य शिरः पादेन परिमृद्वात् (वृकोदरेणा) MBh. 10,61. परिमृदितमृणालीडुर्बलान्यङ्गकानि *zerrieben* UTTARARĀMA. 11,13. अनर्थकमनायुष्यं गोविषाणस्य भक्षणम् । दत्ताश्च परिमृद्यते (so ist wohl st. परिमृद्यते zu lesen) रसश्चापि न लभ्यते ॥ *zerrieben* —, *abgenutzt werden* Spr. 3433. — 2) *reiben, streichen*: भीमस्य पदौ कृत्वा तु स्व उत्सङ्गे — पर्यमर्दत मृदुपाणिना MBh. 3,556. अश्रूणि परिमृदत्तौ *sich die Thränen aus den Augen wischend* R. 2,77,26. — 3) *übertreffen*: जन्वे लक्ष्याभिरूपे u. s. w. धार्तराष्ट्रभीमसेनः सर्वान्स परिमर्दति MBh. 1,4979. — Vgl. परिमर्द.

— प्र *zerstampfen, zertreten, zerbrechen, hart mitnehmen, aufreiben, verwüsten*: काञ्चनानि प्रमृदत्तस्तोरेणानि प्लवंगमाः R. 6,17,11. प्रामृद्यत् महाद्रुमाः MBh. 3,11676. कुञ्जरानश्चान्प्रमर्दतः (कुञ्जरं वा प्रमर्दितुम् ed. Bomb.) 4,1305. (गजः) प्रमृद्य तरसा पादतान्वाजिनस्तथा 6,4711. fig. 8,552. प्रमर्दति 12,10314. प्रमर्दत (प्रवर्तत die neuere Ausg.) HARIV. 13549. तथैवान्यो चमू भूयः प्रमर्दत (संमर्द die neuere Ausg.) 13803. सुरसैन्यं प्रमर्दतः 16313. MBh. 7,1414. प्रमृद्य पुराष्ट्राणि 1,4467. प्रमर्दति LALIT. ed. Calc. 400,6. — Suçr. 4,109,10. 2,181,5. — caus. *zerdrücken, zertreten*: तथैव दिव्या विविधोत्तममज्ञः पृथक्प्रकीर्णा मनुजैः प्रमर्दिताः R. GORR. 2,100,77.

— संप्र *zerstampfen, zertreten, aufreiben, hart mitnehmen*: संप्रमृद्य महत्सैन्यम् MBh. 7,4806.

— प्रति dass.: एवं ते बहुधा राज्ञप्रत्यमृद्वन्परस्परम् MBh. 6,4713.

— वि *zerdrücken, zerreiben, zermalmen, verwüsten*: न मृलोष्टे विमृद्वापात् M. 4,70. स्वान्स्वन्दनान्विमृदतः प्राद्वन्कुञ्जरास्ततः MBh. 6,2778. 4713. विमर्दति 12,10314. विमर्दतम् 8,2255. HARIV. 5300. विमृद्य Suçr. 4,161,14. राष्ट्रम् MBh. 1,5504. विमर्दित *zerdrückt, zerrieben* Jāñ. 2,103. R. 2,88,8 (96,14 GORR.). Suçr. 4,138,16. 2,439,1. ०घ्न *zerbrochen* R. 5,22,20. *reiben*: देहं विमृद्वापात् Suçr. 2,139,3. ०मृद्य 33,13. ०मृदित ÇĀñg. 3,2,20. Vgl. विमर्द figg. — caus. *zerdrücken, zerreiben*: इदमस्य विमर्दितम् R. 2,88,2. विमर्दितमृणालवलपानि ÇĀñ. 66, v. 1. भूमेः सुरतरवव्रथ-विमर्दितायाः *zerstampft* Būā. P. 2,7,26. कृत्वा विमर्दितम् *zerbrochen* R. 3,72,19. *reiben*: विमर्दयेत् Suçr. 2,5,20. स्नेहविमर्दित *eingerieben* 197,16.

— सम् *zerdrücken, zerreiben, zermalmen*: सेचरा पुरस्तात्प्रत्यक्षं पृष्ठं संमर्दिताः TS. 6,6,4,6. संमृदति (lies संमृदति) KAUC. 27. 36. रथिनः — संमृदति स्म सायकाः MBh. 7,498. संमर्द 5,670. सेनाम् 6,3680. HARIV. 13803 (प्रामर्दत die ältere, संमर्द die neuere Ausg.). केचित्संमर्दिता रथैः 12547. Statt संमर्दमानाः MBh. 8,4195 liest die ed. Bomb. besser संमर्दमानाः. Vgl. संमर्द figg. — caus. dass.: तिलान्गुक्षितानुजोदकेन संमर्द्य PAKĀT. 121,13. संमर्दयानः स्वबलं वायुर्वृत्तान्विजज्ञसा MBh. 6,4281.

मर्द (von मर्द) 1) nom. ag. am Ende eines comp. *zerdrückend, zerreibend, zermalmend, vernichtend, zu Grunde richtend*. — 2) m. nom. act. *ein heftiger Druck, starke Reibung*: सोढास्मि (Varuṇa spricht) विपुलं मर्दं मन्दरभमणात् MBh. 1,1121. मर्दं = मर्दयुद्ध *Planetenkampf* Būā. P. 4,14,17. मर्दं Gliederreißen Suçr. 4,34,17. 50,8. 90,11. 14. — Vgl. मर्दं, मर्दि, कठं, करं, काकं, कासं, चक्रं, पाणिं, पिचुं, पीठं. मर्दक (wie eben) nom. ag. am Ende eines comp. = मर्द 1: मेढ्राक्षं so

V. Theil.

v. a. *Schmerzen verursachend* Suçr. 2,463,7. — Vgl. मर्दं, काकं, कासं, चक्रं, तालं.

मर्दन (wie eben) 1) nom. ag. (f. ई) dass.: दितिजसंधानाम् MBh. 13,971. मर्दि 1,2487. 3,11944. 12039. 15679. 13,796. 798. N. 12,77. शत्रुं KATHĀS. 42,125. सर्वत्रयं MBh. 1,5125. तत्रयं 7,3652. 5060. अमित्रबलं R. 2,93,23 (102,25 GORR.). देवदानवं 4,61,46. दैत्यदानवं N. 4,11. वीरं Būā. P. 8,11,10. परं 12. कालियं PAKĀT. 3,14,35. कुलं KATHĀS. 70,104. राक्षं चन्द्रार्कमर्दनम् *angreifend, plagend, quälend* MBh. 1,2539. (मर्दम्) मर्कन्दमर्दनम् 2676. समितिं *im Kampfe die Feinde hart mitnehmend* 9,3063. समरं 13,1193. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Vidjadhara KATHĀS. 48,78. — 3) n. das *Zerdrücken, Zerreiben, Vernichten*: Drücken, Reiben; = प्रिय AK. 3,4,29,221. कण्टकानाम् P. 3,3,116. Sch. दुर्गकण्टकमर्दनेः (so ist zu lesen) Spr. 4463, v. 1. इन्द्रपडास्तिलाः मूढाः कात्ता काञ्चनमेदिनी । चन्दनं ताम्बूलं मर्दनं गुणवर्धनम् ॥ VĀDDHA-KĀñ. 9,13. खल = धान्यादिमर्दनस्थान KULL. zu M. 11,17. पवखल = पवमर्दन Schol. zu ÇĀñk. Çr. 14,40,15. तेषाम् — आसीद्विष्णुनामिव मर्दनम् Būā. P. 3,4,2. Gīt. 2,6. मर्दि KATHĀS. 30,87. परराष्ट्राणाम् das *Verwüsten* MBh. 12,2463. हिम् *das Vernichten* —, *Auflösen des Schnees* Būā. P. 3,26,40. in der Astr. *Reibung* so v. a. *Kampf, Opposition* (der Planeten) VĀññ. Bū. S. 5,19. 16,40. 17,3. das *Reiben, Frottieren; Einreiben, Einsalben* AK. 3,3,22. Spr. 773. Verz. d. Oxf. H. 320, a, 8. केशं 217, a, 14. तैलादिना शिरःसकृत्देहमर्दनम् KULL. zu M. 2,178. मर्दयुद्धं PAKĀT. 238, 7. तैलकाञ्चलमर्दनेः KATHĀS. 4,57. — Vgl. मर्दि, मर्दिनी, काममर्दन. कासं, मर्दं, पासुं, मधमुखं.

मर्दलं m. UGĀVAL. zu UNĀDIS. 1,108. eine Art *Trommel* AK. 1,1,3,8. TRIK. 1,1,120. H. 1408. MBh. 8,2042. R. 2,1. Schol. zu KĀTJ. Çr. 13,3,18. zu KAP. 1,109. वीरं H. an. 4,131. वीरमर्दनक (d. i. ०मर्दलक) MED. th. 26. — Vgl. मर्दं, तालं (u. तालमर्दक).

मर्दिता (von मर्द) adj. zu *zerdrücken, zu zermalmen, zu verwüsten*: नगरं MBh. 3,11327.

मर्दिन् (wie eben) adj. *zerdrückend, zerstampfend, vernichtend*: लोष्टं M. 4,71 = MBh. 12,7044 = 13,4968. रिपुं HARIV. 16092. निम्बममर्दिनी H. 203, v. 1. मर्दिषमर्दिनी Vorz. d. Oxf. H. 93, b, 2. 94, a, 32. b, 31. 44. — Vgl. मर्दं, नुरं, नगरं, प्राकारं.

मर्ध्, मर्धति, ०ते DĀTUP. 21,10 (उन्दने); मर्धिषत्, मर्ध्यात्; *überdrüssig werden, vernachlässigen, vergessen, im Stiche lassen, missachten*; mit acc.: न मर्धति स्वतः कृषिं कृषिं RV. 1,166,2. घोक्रः कृषुष कृषिं न मर्धति 7,23,4. न चिन्ता मर्धिषद्भिः 32,5. नृहि व ऊतिः पृत्तनासु मर्धति 50,4. 73,4. 74,3. न सुखिभिन्द्रे उर्वते मर्धति 6,29,3. 60,4. 3,54,14. भौ मे घमे सुख्ये न मर्ध्याः 21. मा नो मर्धिरा भ्रा दृष्टि तत्रः 4,20,10. न राधसा मर्धिषतः 8,70,4. ÇĀñk. GĀñ. 3,8. med.: तं गोपयस्व तं मा मर्धस्व 2,18. — In der Stelle मृष्टी न इन्द्रे कृषिषा मर्धति Āc. Çr. 2,10 könnte man etwa मृडाति vormuthen. — Vgl. मर्धत्.

— परि *lässig werden*: नकिर्दि दानं परिमर्धिषत्वे denn bei der lässt das Geben nicht nach RV. 8,30,6.

मर्ध्, मर्धति *gehen, sich bewegen* DĀTUP. 11,25.

मर्मकील (मर्मन् + कील) m. Gatte GĀTĀDH. im ÇKDn.

मर्मग (मर्मन् + 1. ग) adj. f. छा in die Gelenke dringend, überaus schmerz-